जयशंकर प्रसाद (सन् 1889-1937)

कविता, नाटक, निबन्ध, सभी क्षेत्रों में युग प्रवर्तक के रूप में जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी साहित्य के मील स्तंभ हैं। उनका जन्म सन् 1889 में वाराणसी के प्रतिष्ठित सुधनी परिवार में हुआ। साहित्य, कला के संस्कार उन्हें बचपन से ही मिले थे। प्रसाद की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। घर पर ही उन्होंने हिन्दी, फारसी, उर्दू का ज्ञान प्राप्त किया। 17 वर्ष की आयु में उनपर से माता-पिता का साया उठ गया। परिणामस्वरूप परिवार के भरण-पोषण का दायित्व प्रसाद के कंधों पर आ गया। अपना दायित्व निभाते हुए ही उन्होंने विपुल मात्रा में साहित्य की रचना की। उनकी लेखनी का कौशल कविता, कहानी, नाटक, निबन्ध, उपन्यास सभी साहित्यिक विधाओं में देखा जा सकता है। प्रारम्भ में उन्होंने ब्रजभाषा में लिखा पर शीघ्र ही खड़ी बोली की ओर उन्मुख हो गए। प्रसाद जी की प्रमुख कृतियां हैं–

काव्य–'प्रेम पथिक', 'चित्राधार', 'आंसू', 'झरना', 'लहर', 'कामायनी'।

कहानी–'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'आँधी', 'इन्द्रजाल', 'छाया', 'पुरस्कार'।

नाटक–'विशाख', 'करुणालय', 'अजातशत्रु', 'सज्जन', 'कल्याणी', 'ध्रुवस्वामिनी', 'स्कन्दगुप्त', 'एक घूंट', 'चन्द्रगुप्त'।

उपन्यास–'कंकाल', 'तितली', 'इरावती' (अपूर्ण)

निबन्ध–'कला और अन्य निबन्ध'।

प्रसाद जी के साहित्य में इतिहास, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक भावना का अद्भुत संगम दिखाई देता है। डॉ. गुलाबराय के अनुसार 'प्रसाद जी स्वंय एक युग थे।' उन्होंने अतीत के इतिहास से कथानक लिए और उन्हें दार्शनिक सोच से मंडित कर हतोत्साहित समाज में एक नई सांस्कृतिक चेतना का संचार किया। उन्होंने इतिहास की पीठिका पर वर्तमान को उद्बोधित किया। प्रसाद जी, चूंकि मूलरूप से कवि हैं। अत: रचनाओं में मानवीय सवेदनाएं काव्यात्मक आवरण में प्रतिबिम्बित होती हैं। प्रसाद जी का रचना संसार गुण और परिमाण दोनों रूपों में हिन्दी साहित्य को गरिमा मंडित करता है और उन्हें एक कालजयी स्थान देता हैं।

Scanned with CamScanner

पाठ सारांश

'पुरस्कार' जयशंकर प्रसाद की प्रमुख कहानी है। इस कहानी का प्रारम्भ कौशल प्रदेश के वार्षिक उत्सव से है। मधुलिका के चयनित भूखंड पर राजा द्वारा हल चलाने का वर्णन है। मधुलिका उसमें बीज देती है। मधुलिका वीर देशमाता सिंह मित्र की कन्या है। मधुलिका, राजकीय अनुगृह अस्वीकार कर देती है। मगध के राजकुमार से मधुलिका की मुलाकात होती हे। मधुलिका सम्मानपूर्वक जीवन बिताती है। एक दिन अतीत से खोयी अपनी झोपड़ी में बैठी थी। राजकुमार अरुण मगध के निर्वासित कर दिये जाने पर मधुलिका से मिलकर प्रेमपाश में बाँध लेते हैं। वह कौशल राज्य को हड़पने की योजना मधुलिका को बताता है। मधुलिका का राष्ट्रप्रेम जागृत हो जाता है। यह कुटिया में न जाकर सेनापति को यह बात बताती है। राजा के आदेश से सेनापति दो सौ अश्वारोहियों की सहायता से अरुण को बन्दी बना लेता है। राजा के आदेश से अरुण को प्राणदण्ड का आदेश दिया जाता है। मधुलिका को पुरस्कार हेतु कुछ माँगने को कहा जाता है तो वह फांसी के फंदे पर अरुण के साथ खड़ी हो जाती है। यह कहानी का मर्म बिन्दु है। कहानी में संवाद जीवन्त है। भाषा सरल है। तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है।

Scanned with CamScanner